

उपवाक्यों, दो वाक्यों में परस्पर संबंध स्थापित करना होता है, अतः अथवा, अर्थात् किंतु, परंतु और, बल्कि, वरन् आदि समुच्चयबोधक शब्द हैं।

**समुच्चयार्थक वि.** (तत्.) समुच्चय या सारे वर्ग के अर्थ से संबंध रखने या वैसा अर्थ सूचित करने वाला जैसे- भीड़ और समाज समुच्चयार्थक संज्ञाएँ हैं।

**समुच्चयोपमा पुं.** (तत्.) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय में उपमान के अनेक गुण या धर्मों का एक साथ आरोप होता है।

**समुच्चार पुं.** (तत्.) सम्यक् उच्चारण सम्यक् त्याग, विसर्जन।

**समुच्चालित पुं.** (तत्.) भली प्रकार उछाली गई अथवा उछली हुई।

**समुच्चित वि.** (तत्.) संगृहीत, ढेर लगाया हुआ, क्रमबद्ध किया हुआ।

**समुच्छिन्न वि.** (तत्.) फटा हुआ, उखड़ा हुआ, जड़ से उखड़ा हुआ उन्मीलित, नष्ट-विनष्ट।

**समुच्छेद पुं.** (तत्.) 1. विनाश, ध्वंस, उन्मूलन 2. जड़ से उखाड़ना।

**समुच्छेदन पुं.** (तत्.) 1. ध्वंस करना, विनाश करना 2. जड़ से उखाड़ना, नष्ट करना।

**समुज्ज्वल वि.** (तत्.) अत्यंत उज्ज्वल, चमकदार, कांतियुक्त।

**समुज्झित वि.** (तत्.) 1. त्यागा हुआ, परित्यक्त, छोड़ा हुआ (जूठन आदि) 2. मिला हुआ, युक्त।

**समुझ स्त्री.** (तद्.) 1. समझ, विचार 2. प्रज्ञा, बुद्धि।

**समुझना अ.** (तद्.) समझना, विचारना, जान लेना।

**समुत्कर्ष पुं.** (तत्.) आत्मोन्नति, प्राधान्य सम्यक् उत्कर्ष, उन्नति, वृद्धि।

**समुत्कीर्ण वि.** (तत्.) अच्छी तरह खोदा हुआ, उत्कीर्ण।

**समुत्तम वि.** (तत्.) अति उत्तम, श्रेष्ठ।

**समुत्तारण पुं.** (तत्.) भली प्रकार पार उतारना, उद्धार।

**समुत्थ वि.** (तत्.) उठा हुआ, उन्नत उत्पन्न, जात।

**समुत्थान पुं.** (तत्.) 1. ऊपर उठाने की क्रिया 2. उन्नति 3. उत्पत्ति, उद्भव 4. आरंभ 5. रोग का निदान, रोग का लक्षण 6. रोग का शमन या शांति, स्वास्थ्य-लाभ करना 7. परिश्रम, उद्यम।

**समुत्थित पुं.** (तत्.) 1. अच्छी प्रकार से उठा हुआ 2. जो प्रकट हुआ हो 3. उत्पन्न, उद्भूत 4. घिरा हुआ 5. प्रस्तुत 6. फूला हुआ 7. जो आरोग्य लाभ कर चुका हो।

**समुत्पन्न वि.** (तत्.) 1. उत्पन्न 2. घटित 3. उद्भूत।

**समुत्साह पुं.** (तत्.) अत्यंत उत्साह।

**समुत्सुक वि.** (तत्.) इच्छुक, अधीर, उत्कंठित विशेष रूप से उत्सुक।

**समुद वि.** (तत्.) प्रसन्नतायुक्त, प्रसन्नतापूर्वक।

**समुदय पुं.** (तत्.) 1. सूर्य का उदय होना 2. उत्थान, अभ्युदय, विकास, ऊपर उठना, उदय 3. समुदाय, समूह, राशि, ढेर 4. कर, लगान 5. किसी ग्रह का उदय, लग्न 6. कोशिश, प्रयत्न 7. युद्ध, समर।

**समुदविलासिनी वि.** (तत्.) मोदपूर्वक विलास करने वाली स्त्री एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, जगण, भगण, जगण, भगण, लघु, गुरु के योग से 17 वर्ण होते हैं।

**समुदाचार पुं.** (तत्.) 1. स्वागत-सत्कार, अभिवादन, नमस्कार 2. सदाचार, शिष्टाचार 3. अभिप्राय, प्रयोजन, आशय 4. संपर्क।

**समुदाय पुं.** (तत्.) 1. समूह, राशि, बहुत से लोगों का समूह 2. युद्ध 3. सेना का पृष्ठ भाग 4. एक नक्षत्र 5. उदय, उन्नति 6. किसी वर्ण जाति के लोगों द्वारा बनाई हुई ऐसी संस्था जिसका मुख्य उद्देश्य सामान्य हितों की रक्षा करना होता है।

**समुदाव पुं.** (तत्.) 1. समूह, राशि, ढेर 2. समुदाय।

**समुदित वि.** (तत्.) ऊपर उठा हुआ, ऊँचा, उदित, उन्नत, उत्पन्न, जात। संयुक्त जो किसी विषय पर सहमत हो प्रचलित।